कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

403456

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words).....

.....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में .....

.....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [ ]

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन 4-03-2017 (Saturday)

दिनांक 4-03-2017

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक [ ][ ][ ][ ][ ]

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्री व कागज ही उपयोग में लिया गया है। 162/2017

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

प्र.1. नए युग में विचारों ..... तुम ॥

अ)

उत्तर: यदि भारतीय नवयुवक दृढ़ संकल्प कर लें तो आँधियों को मोड़ सकते हैं, तारे तोड़ सकते हैं अर्थात् असंभव कार्य भी पूर्ण कर सकते हैं। वह विश्व के इतिहास में अपना नाम रोशन कर सकते हैं।

ब)

उत्तर: नवयुवकों से नए विचारों के उपज का आग्रह किया गया है। उनसे परिश्रम करने के लिए कहा गया है। उनसे आग्रह किया गया है कि वह अपने बाहुबल से लोगों के दिलों में विश्वास जगाएं।

स)

उत्तर: युवक यदि परिश्रम करें तो वह करोड़ो दीन लोगों को नया जीवन दिला सकता है। नवयुवक के परिश्रम में इतनी शक्ति है कि वह धूल में भी फूल खिला सकता है अर्थात् असंभव कार्य भी कर सकता है।

द)

उत्तर: 'कहीं भी धूल में तुम फूल सोने का खिला दोगे' अर्थात् वह अपने परिश्रम के माध्यम से हर कार्य को संभव कर सकता है। 'सोने के फूल' का आशय यही है कि वह देश में सोने की उपज अर्थात् खुशहाली व परिवर्तन ला सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग Roundoff	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

हस्ताक्षर .... परीक्षक

प्र०2. युद्ध और नर-संहारक .... परम धर्म है।

अ).
उत्तर- स्थायी सुख शान्ति अहिंसा से ही प्राप्त की जा सकती है। युद्ध और नर-संहारक शस्त्रों की भीषण चोटों से घायल विश्व का हृदय यही स्पष्ट करता है कि स्थायी सुख-शान्ति का मार्ग हिंसा में नहीं है।

ब).
उत्तर- आज विश्व के सिर पर युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं। सबल राष्ट्र निर्बल राष्ट्रों का बलात् अपहरण कर रहे हैं। इन्हिं कारणों से अशान्ति व्याप्त है। उसे दूर करने के लिए हमें हिंसा मुक्त होना पड़ेगा।

स).
उत्तर- आज देश को युद्ध के स्थान पर शान्ति की स्थापना करने की, शत्रुता के स्थान पर मित्रता के हाथ बढ़ाने की आवश्यकता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र से देश में शान्ति स्थापित की जा सकती है।

द).
उत्तर- आज के युग का परम धर्म यही है कि वह महात्मा गान्धी, महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध की तरह अहिंसा के आदर्शों को अपनाकर मानवता के दीप को प्रज्वलित करें।

यह कागज ... के उपयोग में लिया गया है। 16/2/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ख

प्र०3 निबन्ध लेखन :-

बढ़ती महंगाई : दुखद जीवन

1. प्रस्तावना :-

घर आकर माँ-बाप खुब रोए।
मिट्टी के खिलौने भी सस्ते न हुए.....॥

महंगाई का महादानव आज हमारे समाज को खाता चला जा रहा है। आज के दौर में महंगाई इतना मार रही है कि एक आम इन्सान उठ नहीं पा रहा है। आज उपभोक्तावाद का युग है जहाँ अगर हम अपनी आवश्यकता को ठीक-ठीक समझकर बाज़ार का उपयोग न करे, तो वह असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल कर हमें सदा के लिए बेकार बनाकर ही दम लेगी। महंगाई से बच पाना आज के दिनों में तो असंभव है। तेल के दाम उतरते दिखाई पड़े तो उधर खान-पान की वस्तुओं के दाम बढ़ गए। लोगों को भुखा मरने की नौबत आ गई है। एक गरीब वर्ग का आदमी अपने घर वालों का पेट कैसे भरे। अंततः उसे आत्महत्या करनी पड़ती है। हमारे देश में 30% लोग भूखे ही मर जाते हैं और विशाल शहरों की लगभग 70% आबादी भूखे पेट ही सो जाती है। यह दृश्य कब तक आँखो के सामने मँडराता रहेगा।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2. महँगाई के कारण :-

हम किस-किस को दोष दे। जब हम स्वयं इसमें भागीदारी है तो दूसरों पर अँगुली उठाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। महँगाई के मुलतः यह कारण है :-

i). जमाखोरी :-

कहते है 'आवश्यकता ही शोषण की जननी है।' सत्य भी है, आवश्यकता हमें क्या-क्या नहीं करवाती। इसी आवश्यकता का फायदा उठाकर विक्रेता वर्ग जमाखोरी पर अड़ गया है। चंद पैसो की लालच ने उसे अपने ही भाइयों पर शोषण करने पर मजबूर कर दिया है। 'माँग और पूर्ति' पर ही सारा उतार-चढ़ाव आसिन होता है।

ii). माँग और पूर्ति :-

माँग; पूर्ति से कम हो तो दाम उतरते है और माँग; पूर्ति से ज्यादा हो तो दाम लबालब चढ़ते है। इसीलिए ही नकली कमी दिखाई जाती है और दाम बढ़ाए जाते है।

iii). विदेशी वस्तुओं का निर्यात :-

हम हमारे पूरे दिन की 80% चीजे विदेशी देशों की प्रयोग करते है। जिससे सारा पैसा उन विदेशी बैंको को भरता है और उनके देश का उद्धार करता है। अर्थात 'स्वदेशी अपनाओ' जिससे हमारा पैसा हमारे ही देश में रहेगा और हम अपने देश के उज्जव भविष्य की गाथा गा सकेंगे।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3. **महँगाई के दुष्प्रभाव:-**

बढ़े हुए वेतन से बोली महँगाई।
अरे धीरे चल प्यारे मैं भी आई॥

बढ़ती महँगाई के अनेकानेक दुष्प्रभाव सामने आए है। किसानों की दुर्दशा ही देख लो। हमारे देश का किसान कर्ज में ही जन्म लेता है और कर्ज में ही मर जाता है। और आज तक किसान ने यहीं मान लिया है कि खेती से जीवन यापन तो और भी हो सकता है पर जीवन का विकास असंभव है। आज तो यापन भी असंभव दिखाई पड़ता है। इसलिए नए-नए किस्से सुनाई पडते है। महँगाई से जूझने के लिए बाल-श्रम करवाया जाता है। माता-पिता न चाहते हुए भी अपने बच्चे को श्रम मे जोंक देते है। आजीविका के यहीं कुछ उपाय शेष बचे है। महँगाई तो अपना दम तोड़ने से रही यह सोचकर लोग ही अपना दम तोड़ लेते है। बढ़ती महँगाई के साथ कपट भी बढ़ रहा है। भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। ठगी हो रही है पर देखने वाला कौन है सकने कान बन्द कर लिए है।

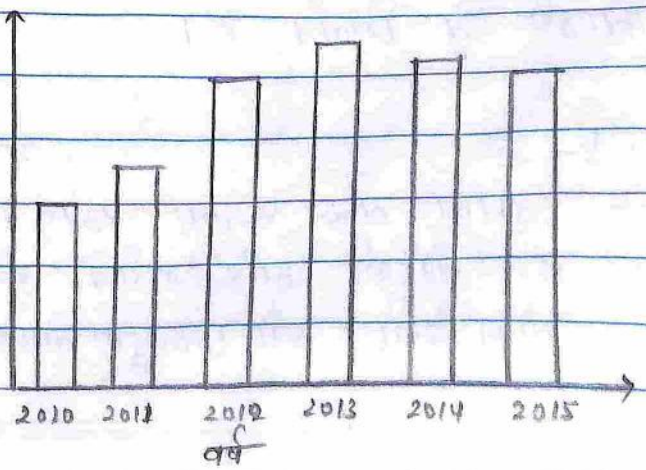

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

4. महँगाई से निवारण:-

महँगाई के कारणों को चिह्नित कर निवारणों का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। एक कारण बेरोजगारी भी है। बेरोजगारी को खत्म करने के लिए तो अनेकानेक प्रयास आज हमारी सरकार कर रही है। सफलता की किरण इतनी चमकदार नहीं है परन्तु आशा पूरी है कि एक दिन सूरज निकलेगा। कौशल भारत, मेक इन इंडिया, आदि अभियान बेरोजगारी मिटाने के लिए ही है जो हमारा ~~भवि~~ भविष्य बदलकर महँगाई को भी मार गिराए। जमाखोरी पर रोक के प्रयास युगों से चले आ रहे है। पर उसमें सफलता नज़र नहीं आती। हमारी सरकार अपने पूरे ज़ोर से इसे हटाने पर लगी हुई है और शायद हम इसमें कामीयाब होंगे।

5. विद्यार्थी विचार:-

मेरे विचार से यह सारे विनाशक (महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आदि) इनका कारण लोगों का चरित्र है। हमें अपना चरित्र सुधारना चाहिए निम्न सोच को ऊपर उठाना चाहिए। और स्वच्छ चरित्र बाजारों में नहीं बिकते। परिवार और पाठशालाओं से मिलते है।

6. उपसंहार:-

आज तक रुला रही महँगाई न जाने कब खुद का दम तोड़ेगी और गरीबों को चैन की साँस लेने का मौका देगी। हमे एकजुट होकर लड़ना होगा।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र०५. प्रतिवेदन (रिपोर्ट):-

स्वतंत्रता दिवस

16 अगस्त, 2017; कानपुर।
हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमारे भावी विद्यालय 'राजकीय उ. मा. विद्यालय, कानपुर' में स्वतंत्रता दिवस आयोजित किया गया। हमारे ही शहर के एस.डी.एम. साहब दिव्य राज सिंह राठोड हमारे कार्यक्रम के मुख्यातीथि रहें। उन्होने बच्चों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हुए संघर्षो से बालकों को परिचित करवाया। बालक वर्ग में अपने देश के प्रति बलिदान के भाव भरने में वह समर्थ रहें। आदरणीय प्रधानाध्यापक महोदय ने तीलक सतकार कर और चादर ओढा कर उनका सम्मान किया। हिन्दी अध्यापक विजय भट्ट ने बच्चों को स्वतंत्रता सैनानियों से परिचित करवाया।

इसके उपरान्त बालकों ने गीत व देशभकित भजन गाकर उपस्थित दर्शकों का दिल जिता। कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए और सबनें बहुत आनन्द प्राप्त किया। मुख्यातीथि महोदय ने विद्यालय में एक बड़ा और संपूर्ण सुविधाओं से युक्त खेल मैदान बनवाने की घोषणा की। अनतत: मिठाई वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०5. पत्र - लेखन :-

प्रेषक: गाँधी मोहल्ला,
जयपुर।

प्रेषिती: पुलिस अधिकारी,
पुलिस थाना,
जयपुर।

दिनाङ्क: 2-5-17

विषय: मोहल्ले में होने वाली चोरियों के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन कुछ इस प्रकार है कि हमारे मोहल्ले मे चोरों की संख्या बढ़ गई है। आए दिन बदमाश महिलाओं के हाथों से पर्स, गले से सोने की चैन, कानो से कुण्डल, आदि चुराकर भाग जाते है। यह लोग कुल चार है जो मोटरसाइकल पर सवार होकर आते है और आम-जनता को परेशान करते है। कल के मामले में उन्होने एक आदमी को चाकू दिखाकर धमकाया और पैसे लूट लिए।

हमारा आपसे यही आग्रह है कि आप इस मामले में जरा नज़र डाले और आपसे जितनी सहायता हो सके वो आप करें।

धन्यवाद।

भवदीय,
कपिल राठौड़।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०6. आलेख :–

बाल श्रम और उपेक्षित जीवन

बचपन जीवन का सबसे हसीन पलों में से एक पल है। यह उम्र बच्चों के खेलने-कूदने और मस्त होकर पढ़ाई करने की होती है। किन्तु हर किसी का बचपन इतना सुन्दर नहीं होता। आज हमारे देश में खून जमा देने वाली और हाड कँपा देने वाली एक सत्य की दवी यह भी है कि हमारे देश के सर्वाधिक बच्चे बाल श्रम से जुड़ते है। किशोर अवस्था नए सपने देखने की अवस्था, उस अवस्था में निर्दोष बच्चों से जोखिम भरे कार्य कराए जाते है। आए दिन हम 10-12 साल के बच्चों को चाय के स्टॉल, कपड़े की दुकान आदि में कार्य करते देखते है। क्या उन्हें अपना भविष्य सुनहरा बनाने का कोई अधिकार नहीं है?

हमारे समाज और सरकार द्वारा कई पहले की गई है। पर कुछ असमाजीक तत्व जो समाज को गंदा कर रहे है, वे यहाँ भी अपनी नाक घुसेड रहे है। यह शर्म की बात है की 2001 की जनगणना के मुकाबले 2011 की जनगणना में बालश्रमिकों की संख्या 15% तक बढ़ गई है। इस सम्बन्ध में विचार करने की अधीक से अधीक आवश्यकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रश्न फीचर :-

भारत पर आतंकवाद की छाया

'वाद' विचार को कहते है और आतंकवाद अर्थात आतंकित करने का विचार। लेकिन यह केवल एक विचार नहीं है। आन्तंकवाद एक विश्व व्यापी समस्या है। देशों की पंक्तियाँ इससे संघर्ष कर रही है। यह प्रमाणित हो चुका है कि भारत में आंतकवाद उसके पड़ोसी देशों द्वारा किया जा रहा है। सारा विश्व जानता है कि पाकिस्तान ही आतंकवाद की नर्सरी है। लादेन को मार गिराने के बावजूद इन बेशर्मो को अक्ल नहीं आयी है। स्वयं पाकिस्तान इस मुसीबत से लड़ रहा है। 'फिर भी तेरे गम में जालिम तेरे सथ खड़े है हम, आतंकवाद से लड़ जाने को खुलकर आज अड़े है हम।'

आज स्थितियाँ कुछ शान्त नज़र आती है किन्तु इतिहास पढ़े तो आँखों से अश्रुधाय बहने लगे। 26/11 का हमला, 9/11 का हमला; हर हमलो में हाथ पाकिस्तान का ही था, जिसका पोषण अमेरिका कर रहा था। लेकिन आज हालात कुछ अलग ही है।

लोग जिंदगी लगा देते है एक घर बनाने में, इन्हें शरम नहीं आती, बस्तियाँ जलाने में।

BSJR/61/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक / प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ग

प्र०१ जन्म से ही वे ..... शब्दों के सहारे।

अ)

उत्तर: बच्चों का शरीर कोमल तथा लचीला होता है। बचपन से कपास लाने का अर्थ है कि जिस प्रकार कपास इधर उधर उड़ता रहता है और उसके गिरने पर भी उसे चोट नहीं लगती। उसी प्रकार बच्चे भी दौड़ते रहते हैं और गिरने पर फिर खड़े हो जाते हैं।

ब).

उत्तर: "दिशाओं को ... बजाते हुए" से कवि का आशय है कि बच्चे जब छतों पर एक कोने से दूसरे कोने की ओर दौड़ते हैं तो ऐसी ध्वनी विकसित होती है, जैसी ध्वनी मृदंग नामक वाद्य पर थाप पड़ने से विकसित होती है।

स).

उत्तर: बच्चों को छतों से गिरने से उनके अंदर बसा हुआ रोमांच बचाता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे पतंग को डोर ने उन्हे थामे रखा हो। अगर वे गिर भी जाते हैं तो एक बार फिर नए उत्साह के साथ उठ खड़े होते हैं।

द).

उत्तर: "पतंगो की ... तरह उड़ रहे हैं" पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है उनमें उतना उत्साह और उमंग भरा है कि मानो ऐसा प्रतीत हो रहा है वे भी पतंगों के साथ उड़ रहे हैं।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र०१. प्रात नभ का .... घुल गई हो।

अ)

उत्तर:- भाव सौन्दर्य:-

कवि शमशेर बहादुर सिंह अपनी इन पंक्तियों के माध्यम प्रातःकालीन सूरज के उदीत होने से पूर्व के आसमान में होने वाले जादू को दर्शाया है। कवि कहते है कि प्रातःकालीन नभ उन्हे नीले शंख समान दिखाई पड़ता है जो थोड़ा नीला तो थोड़ा सफेद है। फिर आसमान को उपमा देते हुए वह उसे राख से लीपे हुए चौके के समान बताते है जो अभी गीला है अर्थात वातावरण में नमी व्याप्त है। आखिर में वह उसे काली सिल से तुलना करते है जिस पर केसर मल दिया हो अर्थात थोड़ी लालिमा छा गई है। इन्हीं रूपों में अत्यन्त सुन्दर शब्दचित्रों से एक दृश्य आँखों के सामने तैराने की कोशिश में कामयाब रहें

ब)

उत्तर:- शिल्प-सौन्दर्य:-

i). भाषा :- सरल, सुबोध्य खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

ii). लाक्षणिक प्रयोग यदा-कदा दिखाई पड़ते हैं।

iii). अतुकान्त शैली है, चित्रात्मक-बिम्बात्मक शैली है।

iv). अलंकार :- प्रात नभ ....जैसे भोर का नभ (उपमा); राख से लीपा चौका (उत्प्रेक्षा); ...जैसे घुल गई हो (उपमा)।

इन्हीं शिल्पों से काव्यांश सुन्दर बन पड़ा है।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र०१ 20 से 30 शब्द :-

अ).
उत्तर: "कैमरे में बंद अपाहिज" कविता में रघुवीर सहाय ने दिव्यांगो के प्रति दया भावना और सहानुभूति के सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति दर्शायी है। नहीं, वह समाज के उद्देश्य की पूर्ति नहीं करती है। कविता में अमानवीयता दर्शाई गई है।

ब)
उत्तर: 'देख आइने में चाँद उतर आया है' पंक्ति से फिराक गोरखपुरी ने माँ का अपने बच्चे के प्रति वात्सल्य को प्रकट किया है। जब बच्चा चाँद माँगने लगता है तब माँ उसे आइना देकर उसकी इच्छा पूर्ण करती है।

प्र.॥. यहाँ मुझे ज्ञात ..... शिकार होता है।

अ)
उत्तर: बाज़ार को विनाशक शैतानी शक्ति वह लोग देते हैं जो 'पर्चेजिंग पावर' से अपने धन वैभव का प्रदर्शन करते हैं पैसे की व्यंग्य शक्ति का उपयोग करते हैं। वहीं लोग बाजार को विनाश का मार्ग दिखाते हैं।

ब)
उत्तर: जो व्यक्ति यह जानता है कि वह बाज़ार से क्या चाहता है वहीं बाजार का लाभ उठा सकता है। अर्थात अपनी आवश्यकताओं को ठीक समझकर बाजार का उपयोग करे तो हम उसका लाभ उठा सकते हैं।

RSTP-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

स)

उत्तर- जब विक्रेता और ग्राहक के बीच के सद्भाव का ह्रास होने लगता है। जब विक्रेता कपट से ग्राहक को लूटने का प्रयास करने लगता है। तब बाज़ार में शोषण नाम का दानव जन्म लेता है।

Q.12

ब)

उत्तर- फणीश्वर नाथ रेणु की यह कहानी पहलवान की ढोलक व्यवस्था के बदलने के साथ उसके कलाकारों के भी अप्रसांगिक हो जाने की कहानी है। राजा साहब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना केवल व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन ही नहीं; सभ्यता के नाम पर एक नई/नए समाज का निर्माण करने का भी प्रतीक है। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने की समस्या है।

'उसने क्षत्रिय का काम किया है', राजा साहब ने यह शब्द लुट्टन के लिए प्रयोग किए थे। क्योंकि कुश्ती की प्रतियोगिता में चाँद सिंह को हराकर अपने गाँव की लाज बचाने वाला वह एकमात्र व्यक्ति था। उसके इसी शौर्य को देखकर राजा साहब ने उसे राजपूतों की उपाधि 'सिंह' देकर उसे नवाज़ा था।

→

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

स)

उत्तर: रज़िया सज्जाद जहिर की 'नमक' शीर्षक कहानी स्वतंत्रता के सरहदों की दोनों तरफ के विस्थापित पुनर्वासित जनों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कथा है। दिलों को टटोलने की कोशिश में कई सवाल खड़े किए गए हैं कि क्या धर्म-मज़हब के आधार पर बाँट दिए गए लोगों के दिलों में जो अपनी जन्मस्थली के प्रति गहरा लगाव है वह समय के साथ खत्म हो जाएगा। या आगामी पीढ़ी में भी यही भावना देखने मिलेगी।

सफ़िया के भाई पाकिस्तान में एक पुलिस थे। वे जानते थे कि पाकिस्तान से कोई भी वस्तु हिन्दुस्तान ले जाना बहुत कठिन कार्य है। और नमक जैसी वस्तु जो भारत में अधिकाय है। उसे भारत ले जाने की कदापी मंजूरी नहीं थी। इसी कारण वह मना कर रहे थे।

द)

उत्तर: 'शिरीष के फूल' हजारी प्रसाद द्विवेदी का एक ललित निबंध है जो कल्पलता से उद्धृत है। जिसमें आँधी, लू और गरमी की प्रचंडता को एक अवधूत के समान अविचलित होकर अपने सौन्दर्य पुष्पों की सुन्दरता को बिखेर रहे शिरीष के माध्यम से मनुष्य के मन की अजेय जिजीविषा तुमुल कोलाहल कलह और समाज के प्रति चिन्तारक बने रहने के मानवीय मूल्य को उजागर करती है। यह हमें शिरीष की ही भाँती फक्कड़ बने रहने की शिक्षा देती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड- घ

प्र.13

अ)

उत्तर- मनोहर श्याम जोशी की यह कहानी अलग दिखती है पर है नहीं यह कहानी अपने शिल्प में जोशी जी के चिर परिचित भाषिक अंदाज और मुहावरों से युक्त है। आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नई उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मुल्य कहीं घिसते चले जा रहे है।

यशोधर बाबू की पत्नी और बच्चे आधुनिकता की ओर भागते हुए नजर आते है उनकी पत्नी बालों में खिजाब लगाती है, ऊँची एडी वाली सेंडल पहनती है, लड़की जीन्स टॉप पहनती है; लड़का घर में टी.वी., फ्रिज, सोफा आदि चिजे लाता रहता है। यह सब आधुनिकता की ही होड है और इस चक्कर में वह अपनी संस्कृति भुलते जाते है। यशोधर बाबू से उनका कोई बच्चा सलाह नहीं लेता उनका कहना है जिस बात को आप जानते हो उसे नहीं उसे आपसे क्यों पूछे?

ब)

उत्तर- यह प्रसिद्ध आत्मकथा डॉ आनन्द यादव द्वारा निर्मित है। जिसमें एक किशोर के देखे और भोगे हुए जीवन के रंगारंग परिवेश की सुन्दर झाँकी है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जहाँ एक ओर उसके सपनों की दुनिया बतायी गई वहीं दूसरी ओर जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण है। निम्न मध्य वर्ग और अस्त व्यस्त अलमस्त ग्रामिण समाज कितनी ही परेशानियों से जूझ रहा है उसकी अनूठी झाँकी प्रस्तुत की गई है।

इसमे आनन्द यादव बचपन से ही विद्यालय जाने के लिए संघर्ष करता है। विद्यालय जाने के बाद वहाँ के बदमाश बालको से जूझता है। गणित के सवालों से जीत कर वह अपनी रूचि कविताओं में उत्पन्न करता है और इन्हीं सब से जूझते जूझते वह एक दिन महान कवि बन जाता है। अतः हम इस कथन से सर्वथा सहमत है।

प्र.14

अ)

उत्तर- ऐन फ्रेंक ने अपनी डायरी गुड़िया किट्टी को सम्बोधित इसलिए की क्योंकि अज्ञातवास में ऐसा कोई नहीं था जो उसकी बाल मन की भावनाओं को समझता और वह निर्जीव वस्तु थी जो सिर्फ उसे सुन सकती थी कभी विरोध नहीं करती। यही कारण था कि गुड़िया को सम्बोधित की जो गुड़िया उसे जन्मदिन पर उपहार स्वरूप मिली थी।

ब)

उत्तर- मुअनजो-दड़ो की खुदाई में अनेक चीजे प्राप्त हुई जिसमे चॉक से बने चित्रित विशाल मृद भाँड, सोने की सुईयाँ, मिट्टी की बैलगाड़ी, काला पड़ा गेहूँ, ताँबे का आईना, मिट्टी के कंगन, आदि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.15

अ). 'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' नाम से 1952 में प्रकाशित जो 'डायरी के पन्ने' नाम से कुछ अंश के रूप में दिए गए है। युद्ध के चलते इतिहास बनते, बदलते और बिगड़ते है। भौगोलिक नक्शा तक बदल देता है युद्ध। युद्ध के कारण कई खास इलाकों के लोगो और जातियों का इसका प्रभाव झेलना पड़ता है। कुछ जातियों का नामोनिशान तक मिट जाता है। इसका दंश कई पीढियों को झेलना पड़ता है।

उसी में एन फ्रैंक ने महिलाओं के लिए आवाज उठाई है। 'मौत के खिलाफ मनुष्य' पुस्तक द्वारा उसने यह बताया है कि महिला एक बच्चे को जनने समय कितने दर्द से गुजरती है और फिर भी समाज उसकी इज्जत नहीं करता। साथ ही शिक्षा के महत्व को भी समझाया है। आज महिला ने अंगड़ाई ली है और शिक्षा पाने की ओर अग्रसर हुई है। ऐन ने महिलाओं का सुखद भविष्य दिखाया है और वह उसके पूर्ण होने की कामना करती है।

समाप्त